

हम कुछ उदाहरण देखेंगे।

www.shreeradha.com  
shreeradha.eschool@gmail.com  
WhatsApp +91 9423209132

एक छात्र, जो धूम्रपान नहीं करता है, धूम्रपान करने वाले दोस्तों के संपर्क में आता है। उनमें से एक उसे सिगरेट देता है और कहता है, "जरा पी के तो देख, मजा आएगा।" प्रस्ताव को स्वीकार करने का निर्णय लेने से पहले धूम्रपान करने वाला सोचता है, "सिगरेट धूम्रपान सुखद हो सकता है। मुझे करके देखना चाहिये।" इस प्रकार, धूम्रपान से पहले वह धूम्रपान करने में कुछ निश्चित खुशी मानता है। उसने सोचा होगा कि खुशी इसलिए मिलेगी कि धूम्रपान करने से हम स्टाईलिश और मॉडर्न माने जायेंगे। या अन्य किसी सोच के कारण धूम्रपान लोगों द्वारा अपनाया जाता है। धूम्रपान करते समय, वह उस खुशी को प्राप्त करता है जिसे उसने धूम्रपान करने से पूर्व उसमें मानी थी। और मूर्खतावश सोचता है, "धूम्रपान वास्तव में आनंददायक है!"

www.shreeradha.com  
shreeradha.eschool@gmail.com  
WhatsApp +91 9423209132

एक कुत्ता हड्डी चबा रहा था। हड्डी चबाते चबाते कुत्ते के मुख में घाव हो गया और उससे खून निकलने लगा। लेकिन वो हड्डी को चबाये जा रहा था ये समझ कर कि हड्डी से खून मिल रहा है। ठीक इसी प्रकार हमको किसी भी वस्तु या व्यक्ति से हमे हमारे मन का माना हुआ सुख ही मिलता है। लेकिन हम समझते है कि उस वस्तु या व्यक्ति या वस्तु से सुख मिल रहा है।

दो मित्र थे। दोनों ने रास्ते में एक लडकी को देखा। एक ने अनदेखा कर दिया। दूसरे ने सोचा, "ये लडकी बडी अच्छी है।" उसने अनेको बार यह सोचा कि बस इसी लडकी में सुख है। इसी से शादी करना है। अब वो उसके पीछे पड गया। कहता गया कि मुझे उससे प्यार हो गया है। लेकिन जब लडकी के बाप ने उसकी शादी कही और कर दी तो भाईसाब के दुःख की सीमा नही रही। किसी भी वस्तु में सुख का बार बार चिंतन ही हमे उस वस्तु के मिलने पर सुखी तथा उस वस्तु के ना मिलने पर दुःखी कराता है।

इसलिए यदि हम बार बार ये सोचेंगे कि श्रीकृष्ण में ही मेरा सुख है तो उनसे प्यार अवश्य हो जायेगा। हमारा मन इस संसारिक सुख से हट जायेगा और धीरे धीरे एक दिन अनंत एवं शाश्वत सुख का आस्वादन करने का अधिकारी बन जायेगा ।